

भा० प०

००॥ श्रीगणेशायनमः॥ श्रीस रुयकनयायनमः॥ ॐ नमो श्रीजना
र्दना॥ नाही भवभयभावना॥ नंदे खो निमित्तपणा॥ नमन श्रीचरना सहु
रुचा॥ १॥ श्लोक॥ भक्त्या भागवतं गावं॥ अभाव्यं काव्य पाठतः॥ पठना
प्रदयुसतिर्ज्ञानप्राप्तिस्तुभक्तिः॥ २॥ तिका॥ नमन श्रीयेकदंताः ये
कपणे तु चिआताः ये किदा विसिउने कताः परिये कात्मतानं मोडे ३
तुजमा जिवासुचराचराः त्मणे नि स्रणिजे लंबोदराः यालागी सक
ळाचा सोयराः साचो कारा तुहो सि ४ तुजदेखे जो नरु त्यासी सुखा
चा संसारः यालागी विघ्न हरु नामादरु तुजसाजे ५ हरुषे नव
वदन गणराजा च्याहि पुरुषार्थ त्याचि भुजा प्रकाशिया प्रका

(2)

त्रिवोजा तोसळकततुसानिजदंतु ६ येकेचिकळेसकळष्टहि आपले
पणेश्वरतउठि तेचितुसिदेखनिदृष्टि सुखसंतुष्टिविनायेका ७ सुखाचे
पेललेहोद नाभिआवर्तलाजातुं जोधाचामिरवेनागबंद दिसेसन्निध
साजिरा ८ प्रवृत्तिपुरुषचरणे तळिघालिसिवोजावोनी तथावरिस
हजासनि पूर्णपणिमिरवसि ९ अनुमात्रजालियाभेदी शोधिता
विघ्ननयेदृष्टि तोडीसिसंसार १० तोचितुसेमुष्टिनिजकरु ११ भा
वेभक्त्युजोभावो त्याचेउगविसिभवसाके वोदुनिकाढिसिआपणाके
निजनिवोडंअंकुश १२ साचेनिरपेक्षुजोनिःशेष त्याचेतुवाढविसिसुख॥
देवोनिहरिखाचेमोदक निवविसिदेखनिजहस्ते १३ सुहृमाहोउनि सु॥

3

शुभाकारं कृत्वा शापनि दीधनक्षमं न्याये विगता
तां समुद्रसमं मन्त्रतापुत्रीं पु। ह ई व्यती। शादिक। उ
रुभसं आमुचे कुंक। शापे नी दी ध के वरु। अन्ये
वीयहे सकल। के वरु मन्त्र। तां सल २०। भुमीमा
नी समुद्रासी। म्या रयी। क री। मज गे जी या नी जे
धामा सी। तां स तने दी व। धु ड वी। २५। शा क
नव। न्यत्र ये दे ह म य व क म ही तल। जना ध री
धी भू द य वी व्यती क लो यु गे। शादिक। जै क उ ध वी
ही त गे वी भ म्या सा दी जी या भू वी। धो दी या चे का
ल पा नी। न छ द वी जन हो ति २१।

ॐ हे उनी घर दरी ॥ जरी तुनी धाठा सीवा हेरी तरी तो
सा गुची कजीण भारी ॥ अनर्थ करी ॥ होई छ ॥ ३१ ॥ आधी
समुठ्ठने हें सो डावा ॥ पाणी अभीमान दंडावा ॥ वासना जव
जुट मुंडावा ॥ मग त्या डावा ॥ अशु मु ॥ ३२ ॥ अने हो हा वैते
नी सोडे ॥ अभीमान करी ॥ डे ॥ हेतु जवाटे लसीके डे ॥ ३३ ॥
तरी रोके डे ॥ परीयसी ॥ तं भवसुप जे सर्वगत ॥ तथे
उनी माचीत ॥ सावधान ॥ शि हावे संतत ॥
नी जरुपी ॥ ३४ ॥ तया अरुपी चीता ॥ नी भारी सी धरणा
धरीता ॥ नी जभाव तंभ येत ॥ तसुदता ॥ पावले ॥ ३५ ॥
यसम ॥ साम्ये समस्त ॥ समवे पवले चीत ॥ तणे समभावे

॥ ५ ॥

नीभीत तेभी चातेये॥ रा हावे २३६॥ अधीग्रहाभ्रमातेमागा
५॥ मगम्याहजसीकोवेरा हावे॥ असमानलुभ्यभावे॥ तेवी
५॥ ईबरवे॥ परीयेसी॥ ३७॥ श्वरूपसामसमदृष्टी॥ समभावेंवी
चारचेभ्रष्टी॥ नीवासस्थानाचीजाटाटी॥ सर्वथापोटी॥
नधरावी॥ ३८॥ तुसर्वसर्वमनोसी॥ सर्वाधारसर्वदेशी॥
जैसाभीहोउनीमजपारी॥ नगलतायेसी॥ नीजधामा॥ ३९॥
मजनीजधामान्यावे॥ होतुसीछुउधवे॥ तेंनीजबोधेभ्र
भाव॥ श्वमेवेरावे॥ सगीतले॥ ४०॥ नकरीतांहेउपयेस्थीती
सर्वथानवडमाझीप्राप्ती॥ मगनुनीजधामाप्रती॥ कैस्यागती
येसीछा॥ ४१॥ गनुठीवाउनीयावेगेसी॥ न्यावनीजधामासी

(6)

गार्हा

लजसी गती तेथेना ही पक्षासी ॥ गम्ये गरुडासी ॥ तेन के गर
लजसी व्यावघेउनी याखा दी ॥ मजरवा दुचीना ही ग्रीभुधी
तुजनसा दीता अहं बुधी ॥ गमनसीधी ॥ तेथेना ही ॥ ४३ ॥
न्यागीता अहं भावस्थीती ॥ तेथेना बाउ पाये युती ॥
तेथेनी जथाभाप्रती ॥ नव गती सर्वथ ॥ ४४ ॥ जें जें देखसी ॥ ४५ ॥
साकार ॥ तेते जगपा नै ॥ रीरवी चानी धीर ॥ करीसा
चारा ॥ नीज बोधो ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥
॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥
॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥
॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥
॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥
॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

68
-वावेद तेवाळी जे जअवादे॥ वाचीक सा डवीळ वेदे॥ जे तीरा
वे॥ ला जीठा॥ १७॥ जे जे संकल्प॥ अकळले॥ ते ते कव्वीत
पेजाले॥ जे जे अहंकार अले॥ तेवाळीले॥ वीजातीया॥ १८॥
जे जे ईद्रीये गोचर॥ ते ते जाण पांजेभर॥ हे नीसपिये वीचार॥
केले खेर॥ नीश्रीत॥ १९॥ तो नीश्री नीये वीवेक॥ ज। भातां
नीश्रीत भाईक॥ येवं मया म॥ हा कोक॥ करी सकव्व॥ २०॥
ळीते॥ २०॥ जे हे डादे खेसा॥ हा सोसा॥ ते हे डा मईकव्व
हा॥ हा कोळ खेतु सा चार॥ धैर्य नीधारि॥ धरुनी॥ २१॥
जे सीश्वनी चीरा जीवं॥ केवल ब्रं हनी चीजा जीवं॥ ते से ची हं
जाण सर्व भव वैभन॥ वीळासा॥ २२॥

श्लोक ॥ पुस्तोयुक्तस्य नानार्थो भ्रमः सगुणदोषभाक ॥ व. १० ॥
 वीकभाती गुणदोषाधीयो भेदः ॥ ८ ॥ दिक ॥ परमात्मने श्रीवीरकी
 तो पुरुषबोली जे अमुकी ॥ आशीना नवें भेद भासती ॥ नीजनी
 जीती वीसरोनी ॥ ५३ ॥ यावी सराचेनी उच्छेदसे भीत्या भेद
 सयेवे भसे ॥ यभेदाचेनी अवयव दीसे ॥ गुणदोसे ५४ ॥
 जरी भेदची नाही ॥ तरी गुणदासने ॥ दीसावया ठावोची नाही ॥
 गुणचो ठाई ॥ सवथा ॥ ५५ ॥ यावी भेदाची उदभटी ॥ गुणदोष
 दृष्टीउगी ॥ तेथे कर्माकर्म जीपुटी ॥ भेद दृष्टीउसवे ॥ भेदें थोर
 केळे वीषम ॥ कर्मकर्म जन्ममरणादी धर्म ॥ नीजकर्म ॥ प्रकाशी
 ५७ ॥ कर्मची कर्मनेरक यत्तने ॥ कभ्ये कर्म ज्वरजिआ ॥ कर्म
 ची करुनी कर्मचामो येना ॥ समाधाना ॥ दावीजे ५८ ॥

॥ ११ ॥

(8)

मज्झिमोद्धा... अप्रमत्तं असुखं व्योवका न मीरा
विपु... पिना न यस्मात् सर्वान्नो हीतं धी यस्तव नायये
मे ब्रह्मा दयं जं नु भुङ्क्ते बहिन र्थभावा ॥१५॥ टीका ॥ पुसो
जावा ब्रह्म यां सी ॥ तो गुत का वृष्टी कर्मा सी ॥ प्रजा ठरनी मानसी ॥
आ हीर्ण सी चीतीनां ॥ ७५ ॥ जो आपु का नी जस्वभावी ॥ सदा संसार वा
ट वि नो केयी सौ सार नो उ वी क न डू उ ची सर्वथा ॥ ७६ ॥ वा डो ने
दी सौ सार सी ॥ को प आ का प्र का सी शा प दी धला नार दा सी ॥
ब्रह्मा उप दे ती ह्म गौ नी ॥ ७७ ॥ जो सा रिं अशक नी स सौ सा
र युक्त ॥ हा शी पु सो न मनी ची त जाण नि श्ची त श्री कृष्ण ॥ ७८ ॥
पु सो जा वा र ही प्र ती त व ते सदा आप मनी अपु ले मन प्र ती टी
नी अन्ये था दे ती शा पा ने ॥ ७९ ॥ जी वी धर नी अ र्था श की ती ष्या
त उप दे शी ती वी ष यो धर नी यां ची ती जी वी का वृ ती उप दे शु ॥ ८० ॥

९

॥१५॥

ते ये गुरु ही वीर ये शक्ती॥ ते ये ही व्यासी कैची वीर की॥ ऐसी या
न उ प दे ही ती॥ ते प्र श की॥ श्वाथ ते॥ ७७॥ स स स्वरूप स्व प्र का श॥ आ
भा तु आ वी ना श॥ यु की प्र यु की उ प दे श॥ धी के व्य नी रा श॥ तु से नी॥ ७८॥
ब्र ह्म ज्ञाना या व का॥ तु ज व ग का द न्ना ना या॥ न दी स ग्ग स र्व था॥
म ज या हा ना त्री वी की॥ ७९॥ स वं आ सा तु न व ना॥ अ ह्म ज्ञाना या द
ना॥ आ स न्ना धी स र्वा ती॥ ८०॥ न्ना ना था तु ये कु॥ ८१॥ ॐ का॥
न स मा ह्म व न्म न व न्म न॥ ८२॥ स वं स मा स्वर न म कु व
यि कु व धी छा नि यो ग धी र न द्ध जी ना स्मि त्ता ना र यो ग
न र व ने श र स प्र प द्वा॥ ८३॥ ॐ का॥ था व्वा गी जी था द व प नी
नी स शु ध प वी प्र मु नी तु ज मा या मो हो ना न द्ध ती॥ प वी त्र वा ती॥
था व्वा गी॥ ८४॥ जो आ क र्ण गु णा आ तु॥ सा सी ते गु ण करी प्रां तु॥ सा गु
णा सी तु ज मा जी आ तु॥ था व्वा गी आ न तु स र्व दो॥ ८५॥ दे श का ह्म

॥१५॥

त ता आपार तुजनकर वे सा चार थाळागी अनंतुं आपार श्रु
ती सी पार न करुची ८ तुज म्या करावी वीनती की ती या
वे का कुळ निदुदयेखु शान मुती जाण त्री जगती तुची
तु ८४ शान आशान माया रानी घस्विरा आधीन गा आस
ती सा घस्विरा की घस्वर मुती सार की ती त्री दृष्ट्या ॥ ८५ ॥
तु सर्वाचा नीयंता सर्वद अर्कता हे सा घस्वर तुक्त
खुनाथा ॥ ८६ ॥ गुनी आकाश येकु ॥ ८७ ॥ देस काळतास्य
भावसी ना मुनपवे ज्या स्वना सी नेथी वा तुनी वासी ॥
पुण पुण तुनी आवतार ॥ ८८ ॥ नराय आवीनारुखान थाळागी
क तु नारायेण तु सनी जी वासी चळण या रुपण तुज पासि ८९
ये सा घस्वर तु आपण नर सर्वा नारायेण पुढ्या समई अर्जुना

108

सुटती जन्म वादगेरी हात गुणी या पाहुनी या दीगी अक्षता
त्रा हाटी मनुनी ॥ १५ ॥ पा हाता पच गुनी कसं सार सह ज जाळा
से थार माजी सोबळा दक्षणी वी योग खचर उध वले कर सउ
पळे ॥ १६ ॥ मी सउ धवाची सउ पणी अहं ह्ये सा सुरळा गळा
जनी या सी करावया सुउ पणी दक्षणी गुणी चाळीळा ॥ १७ ॥ तेथ
साउणीळा गळा आतां येदु अत्र धुत सवाद कथा याची मंत्री
ना मंत्री क्षता होये साडीती जी दक्षणी ॥ १८ ॥ श्री दक्षणी ह्मण ठ
धवासी सावध होई नी जे सउनी या मनुष्ये को कसी ॥ अ
प अपणा सी उधरीती ॥ १९ ॥ मुमुक्षु मागी चें सज्ञान को कत ह वीच
क्षण वी चार नी कार्य कारण ख बुधी जाण उधरीले ॥ २० ॥
नी सानी सबी वेक आनि ये हागीती हाग मुखे नी सेते येथा सु
ख ही त संतो हो आगी कारीती ॥ १ ॥ नी सेते उर ले जे जाण ॥

ते मासे स्वर पची दून तेची साध काये साधन अनये पणची
निती २ भावी नामाक्षी दृढ भावना मिची ते होती जाण कीर कि
मृगीदीची घारुणा अव्यापणा उधरीती ॥ ३ ॥ **श्लोक ॥** अह
मा गुरुरासेव पुरराप्येकी होशता येष्टसेक्षानुगाना
भ्याः श्रया सावनु वसते ॥ २० ॥ **श्लोक ॥** पद्मादीयोनीचा
गर्शहीताहीत ज्ञान असना पाही ॥ मा गुरुराचा पुर हो देही ॥ हा
न पाही ॥ स्फुरदृप ॥ सा दुःख पुत्रा वासना ॥ जो न करीवी
राये केव्पना ॥ तो अपुला गुरा व्यापण जाण ॥ नरक यात नाचु
कवीळी ॥ १ ॥ जो काटा वळी गभजि मासी ॥ मनेनी उबगळा
मरणासी ॥ आधीला गळी या मानसी ॥ जन्म मरणासी नासा
वथा ॥ २ ॥ अवडीनु पजरची पुत्री ॥ लीशानलगे आहीर्णेसी का
हंशासीळ ॥ आयुष्यासी नीज हीना सी न देखीजे ॥ ० क्षण के

11

॥ २० ॥

॥ २० ॥

118

णाकाहजातसेवैर्य काहीनसाध्वीपरमार्थजन्ममरणा
चा आवर्त पुढेअनर्थरोकडा ८ नरदेहमोक्षायवाटावृथा
जातसेकटकटा हृदई ओं धीला गळा मोटा वीरयेचेछावी
सरला ॥ ९ ॥ प्रसन्नलक्षण अनिये पोसारदिसना शीवंत ॥ थाला
गीनकेतो अशोक ॥ कावर्वरत ॥ कोकी ॥ १० ॥ थाचपरीअनु
मान परको कामागभावना ॥ अतःनेदिमना ॥ नैश्वरपतनाजा
द पुनी ॥ ११ ॥ कंईदरपाकरीळगावेद ॥ कंघर्तुलभवबंध ॥ कैदे
खेनतोनिजबाध ॥ परमानद ॥ जेणहोये ॥ १२ ॥ धावेपावेगा श्रीह
रीमजउधरीभवसागरी ॥ दरपाकरीदीनावरी ॥ भक्तकैवारी श्री
लक्ष्णा ॥ १३ ॥ जेसीजळावेगळीमासोळी ॥ तेसाबाधालागीतछ

(12)

॥२५॥

॥२५॥

मळी॥ प्रेम प्रेम पडी भरल्या मेळी॥ देह न संभाळी॥ सर्व था १४॥
जुही वीवेक कळळा मना॥ मही न तु दति विराये वासना॥
तेण संत प होउनी जाणा॥ नारा येणो तुची तु १५॥ श्री कृष्ण
ह्मण उधवासी॥ सवीवेके ते राये ज्या पासी॥ तोची व्यापुळा
गुत आपणासी॥ वीरा येसी जाणा वा १६॥ याची पानी जळुधी
सी मिची वीवेक प्रकाशी॥ ते स्व जाण नीज बोधासी॥ नीज ॥२५॥
बोधासी निज मानसी॥ वीवेक ज्यासी जैसा भावे सासी
मितै सादवे॥ यदर्थी तु वास न होत घरावा १७॥ ॥२५॥
उरुता ते चमो॥ धिराः सोरवा योग विचारदा॥ अविस्तर
प्रपत्येति सर्वदा तपु पशु दित ॥२५॥ टिको॥ एवं वैराग्य
क सुर्ण मरीत धीर पुरुषा वीवेक साखे योगे विवंचितानी

(18)

जो नील जगदीश का ह ॥ नरदेही वीवेक आसानी जग पपा
नवें कै से जे सर्व शक्ति युक्त असे ते सावकाहे देखति ॥ १७ ॥ जे प्र
वेशे सर्व हो की ते जे सर्व शक्ति शक्ती दाने ते ना तब सर्व हो की ते ॥
हा श्वर पाते पा हाता ति ॥ १८ ॥ ठ धवा का ये सा गो ॥ १९ ॥ बहुते
शरीरे कै ली ॥ २० ॥ मन नर देही आवही मोटी ॥ २१ ॥ ठ ग ठ गी भी हो
नि ॥ २२ ॥ श्लोक ॥ ये क द्वि ॥ २३ ॥ आ दो बहु पाद ॥ २४ ॥
पद गवा हा संति पुरा ॥ २५ ॥ सा मे पा नु श्रि या ॥ २६ ॥
दि का ॥ के वी ये क चरणी हो ने ॥ २७ ॥ पा घं चि आ पा ने ती पा घं चि
मनो हरे अति सुंदरें चतु ष्पद ॥ २८ ॥ सर्पा दी पो नी चा ग ई भ्या
चरणी के वी ना ही ॥ ये क चाल ति बहु ता पा घं ॥ कै ली पा ही
शरीर ॥ २९ ॥ ऐ सी शरीरें ने जो की ति ॥ भ्या नी मा ण कै ली या

(13)

॥ २५ ॥

द्वीति॥ मज्ज कार्यातिनेणति॥ मुट मति॥ याला गि॥ २६ मज्ज क
र्त्तुची प्राप्ती होवया वा गिनी श्रुति॥ स्या सो प्रवे हो निशकी॥
पौनुती प्रद्वति॥ भ्या केळी॥ २७ सेण देहे मज्ज पावति॥ सा देहा
ची मज्ज आतिप्रिति॥ याला गी श्रुति न न देहे वणिति॥ देव वा
ळीति॥ नर देहा॥ २८ जैसी न न देहा ची प्रीति॥ द्रष्टु सागे उध
वा प्रीति॥ येण हो नीने मज्ज पावति॥ नाना युक्ती वीचारे॥ २९ ॥ **छो क**
अज मां नगर्व संसर्था युक्ती नु मि जीरी श्वरं गृह्यमाणं
पुणै लि गौर ग्राह्ये मनु मो नंत ॥ ३० ॥ टिका ॥ ३१ ॥ येउमी नर दे
हा प्रति॥ कायची गवेशणा करीति॥ जो र्धस्वर त्रिजगति॥ उभति
स्वर्गीति संकान्ता॥ ३० ॥ वृद्धी युक्त वीवेक कनण॥ ते जेण प्रकारे प्र
काश पणे॥ साचा हि प्रकारे हो मण॥ येण लक्षण लक्षिनि॥ ३१ ॥

॥ २५ ॥

138

यैस्याना नापरिच्य। अममाना मितववष्येनकृजाणा जे
वदिति सादु निअसिमाना सांक्षा तपणा ते येति ॥ ३७ ॥
मुखतवं श्रुत सीध आसने निर्मल आरी सादिसने वी
बुधीने निविवेक असा आसा साते नरदेहि ॥ ३८ ॥ येची वी
षीचा घटि हास्ये जाणववपि सागन पुरातन येदु आ
वधुत सवाद लेक्षण शासन साधका ॥ ३९ ॥ श्रुत
ये आत्रा पुरुहं न तिमि ॥ ४० ॥ सपुरातन अवधन
स्य संवाद येदार विवत जेसा ॥ ४१ ॥ टिका ॥ हुरो ह्य
मगां विदु उधवा अमचा पुर्वज येदु तेण ब्रह्म शा ना सी स वा
दु के का विरादु अवधुता सी ॥ ४२ ॥ राया येदु ह्यण सी कैसा
क्षेत्र मृतीया सुर्वजैसा राजा येद्रा व्या प्रकाशा नीज द

(14)

॥ २० ॥

हा व्येपित ॥ ३४ ॥ गुरुची वक्षणा जैकता ॥ सा युज्य मुनी आ
ली हाता ॥ ने हे पुरातन कथा तुज मी आना सागना ॥ ११ ॥
धोका ॥ अवधुत दीज केची अरंतः सकुतो भयं ॥ क
वि निरीक्ष्य तरुणं धेनुप्रपन्नं धर्मवित् ॥ २५ ॥ टीका
को ॥ ही एक अवधुत ॥ नीज से न प्रकाशवत ब्रह्मानंद
उद्धृत ॥ ये दुने ये तु देखी का ॥ या आवधुता से लक्षण ये ॥ २॥
हुनी रीक्षी आपण देखी के व प्रसून धारण ॥ हो ये ब्राह्मण
ब्रह्मवेता ॥ २॥ असो हेतो अवधुत नीरां के नीर्गुण वर्तन ॥
ये दु व्या हाळी ये होता जागा देखीळा वनात स सुख ॥
आंती व प्राणत ह्या बाहरी रीघो ने दि सर्वथा स्वभावे
प्राणा पान समता ॥ आळी न दृशीता धारणा ॥ २९ ॥ नवळ
तयाचे पा हाण दृश दृशी हे ॥ देखण ॥ जाळी सर्वा देखण ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com